

गायत्री चालिसा

हरी शरी कली मेधा प्रभा जीवन ज्योतिप्रचण्ड ॥
जगतकरांति, जागृताप्रगतरिचना शक्तिअखण्ड ॥
प्रणवौ सावतिरी स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥
शांता जिननी मङ्गल करनी, गायत्री सुखधाम ।

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी । गायत्री नति कलमिल दहनी ॥
अक्षर चौवसि परम पुनीता । इनमें बसें शास्त्र श्रुतिगीता ॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा । सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥
हंसारूढ सतिबर धारी । स्वर्ण कान्ता शुचिगगन- बहारी ॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला । शुभ्र वर्ण तनु नयन वशाला ॥
ध्यान धरत पुलकति हति होई । सुख उपजत दुःख दुरमति खोई ॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया । नरिाकार की अद्भुत माया ॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई । तरै सकल संकट सौं सोई ॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली । दीपे तुम्हारी ज्योतिनिराली ॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं । जो शारद शत मुख गुन गावैं ॥
चार वेद की मात पुनीता । तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥
महामन्त्र जतिने जग माहीं । कोउ गायत्री सम नाही ॥
सुमरित हयि में ज्ञान प्रकासै । आलस पाप अवदिया नासै ॥
सृष्टिबीज जग जननिभवानी । कालरात्रिविरदा कल्याणी ॥
ब्रह्मा वषिणु रुद्र सुर जेते । तुम सौं पावैं सुरता तेते ॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे । जननिहि पुत्र प्राण ते प्यारे ॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी । जय जय जय त्रिपदा भयहारी ॥
पूरति सकल ज्ञान वज्जाना । तुम सम अधिकि न जगमे आना ॥
तुमहि जानि कछु रहै न शेषा । तुमहि पाय कछु रहै न क्लेसा ॥
जानत तुमहि तुमहि विहै जाई । पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
तुम्हरी शक्ति दीपे सब ठाई । माता तुम सब ठौर समाई ॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे । सब गतविान तुम्हारे परेरे ॥
सकल सृष्टि की प्राण वधिाता । पालक पोषक नाशक त्राता ॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी । तुम सन तरे पातकी भारी ॥
जापर कृपा तुम्हारी होई । तापर कृपा करें सब कोई ॥
मंद बुद्धि ते बुद्धिबल पावैं । रोगी रोग रहति हो जावैं ॥
दरदिर मटि कटै सब पीरा । नाशै दुःख हरै भव भीरा ॥
गृह क्लेश चति चिन्ता भारी । नासै गायत्री भय हारी ॥
सन्तता हीन सुसन्तता पावैं । सुख संपतियुत मोद मनावैं ॥
भूत पशाच सबै भय खावैं । यम के दूत नकिट नहि आवैं ॥
जो सधवा सुमरिं चति लाई । अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी । वधिवा रहैं सत्य व्रत धारी ॥
जयतजयतजिगदंब भवानी । तुम सम ओर दयालु न दानी ॥
जो सतगुरु सो दीक्षा पावे । सो साधन को सफल बनावे ॥
सुमरिन करे सुरूचिबडभागी । लहै मनोरथ गृही वरिगी ॥
अष्ट सिद्धिनिवन्धि की दाता । सब समर्थ गायत्री माता ॥
ऋषिमुनियती तपस्वी योगी । आरत अर्थी चिन्तति भोगी ॥
जो जो शरण तुम्हारी आवैं । सो सो मन वांछति फल पावैं ॥
बल बुद्धि विद्या शील स्वभाउ । धन वैभव यश तेज उछाउ ॥
सकल बढैं उपजैं ; करै धरि धियाना ॥

